

سُورَةُ الْمُؤْمِنَاتِ

Surah 60 — Al-Mumtahana (She that is to be examined) • Medinan • 13 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَتَّخِذُوا ۚ عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ
تُلْقُونَ إِلَيْهِم بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا ۚ بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ
وَإِيَّاكُمْ ۚ أَنْ تُؤْمِنُوا ۚ بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا ۚ فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ
مَرْضَاتِي ۚ تُسِرُّونَ إِلَيْهِم بِالْمَوَدَّةِ وَأَنَا ۚ أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ ۚ وَمَنْ
يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ

ऐ ईमानदारों अगर तुम मेरी राह में जेहाद करने और मेरी खुशनूदी की तमन्ना में (घर से) निकलते हो तो मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ तुम उनके पास दोस्ती का पैगाम भेजते हो और जो दीन हक़ तुम्हारे पास आया है उससे वह लोग इनकार करते हैं वह लोग रसूल को और तुमको इस बात पर (घर से) निकालते हैं कि तुम अपने परवरदिगार खुदा पर ईमान ले आए हो (और) तुम हो कि उनके पास छुप छुप के दोस्ती का पैगाम भेजते हो हालाँकि तुम कुछ भी छुपा कर या बिल एलान करते हो मैं उससे खूब वाकिफ़ हूँ और तुममें से जो शरूष ऐसा करे तो वह सीधी राह से यकीनन भटक गया

2

إِنْ يَتَّقُواكُمْ يَكُونُوا ۚ لَكُمْ أَعْدَاءُ ۚ وَيَسْطُورُوا ۚ إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتُهُمْ بِالسُّوءِ
وَوَدُّوا ۚ لَوْ تَكْفُرُونَ

अगर ये लोग तुम पर क़ाबू पा जाएँ तो तुम्हारे दुश्मन हो जाएँ और ईज़ा के लिए तुम्हारी तरफ अपने हाथ भी बढ़ाएँगे और अपनी ज़बाने भी और चाहते हैं कि काश तुम भी काफिर हो जाओ

3

لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيَمَةِ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ ۚ

क़यामत के दिन न तुम्हारे रिश्ते नाते ही कुछ काम आएँगे न तुम्हारी औलाद (उस दिन) तो वही फैसला कर देगा और जो कुछ भी तुम करते हो खुदा उसे देख रहा है

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ ۖ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ ۖ إِذْ قَالُوا ۖ لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءُوكُمْ ۖ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا ۖ بِاللَّهِ وَحَدُّهُ ۖ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن شَيْءٍ ۗ ۝ ٩ ۝ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ

(मुसलमानों) तुम्हारे वास्ते तो इबराहीम और उनके साथियों (के कौल व फेल का अच्छा नमूना मौजूद है) कि जब उन्होंने अपनी क्रौम से कहा कि हम तुमसे और उन (बुतों) से जिन्हें तुम खुदा के सिवा पूजते हो बेज़ार हैं हम तो तुम्हारे (दीन के) मुनकिर हैं और जब तक तुम यकता खुदा पर ईमान न लाओ हमारे तुम्हारे दरमियान खुल्लम खुल्ला अदावत व दुशमनी कायम हो गयी मगर (हाँ) इबराहीम ने अपने (मुँह बोले) बाप से ये (अलबत्ता) कहा कि मैं आपके लिए मगफ़िरत की दुआ ज़रूर करूँगा और खुदा के सामने तो मैं आपके वास्ते कुछ एख्तेयार नहीं रखता ऐ हमारे पालने वाले (खुदा) हमने तुझी पर भरोसा कर लिया है और तेरी ही तरफ हम रूजू करते हैं

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً ۖ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَاعْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۖ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

और तेरी तरफ हमें लौट कर जाना है ऐ हमारे पालने वाले तू हम लोगों को काफ़िरों की आजमाइश (का ज़रिया) न करार दे और परवरदिगार तू हमें बख़्श दे बेशक तू ग़ालिब (और) हिकमत वाला है

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ ۖ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا ۖ اللَّهَ وَالْيَوْمَ ۖ الْآخِرَ ۖ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ

(मुसलमानों) उन लोगों के (अफ़आल) का तुम्हारे वास्ते जो खुदा और रोज़े आखेरत की उम्मीद रखता हो अच्छा नमूना है और जो (इससे) मुँह मोड़े तो खुदा भी यक़ीनन बेपरवा (और) सज़ावारे हम्द है

۝ عَسَى ۖ اللَّهُ أَن يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُم مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۖ ۝ ٩ ۝ وَاللَّهُ قَدِيرٌ ۖ ۝ ٩ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ ۖ ۝ ٩ ۝ رَحِيمٌ ۖ

करीब है कि खुदा तुम्हारे और उनमें से तुम्हारे दुश्मनों के दरमियान दोस्ती पैदा कर दे और खुदा तो क़ादिर है और खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

لَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقْتُلُوا فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا ۖ إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ

जो लोग तुमसे तुम्हारे दीन के बारे में नहीं लड़े भिड़े और न तुम्हें घरों से निकाले उन लोगों के साथ एहसान करने और उनके साथ इन्साफ़ से पेश आने से खुदा तुम्हें मना नहीं करता बेशक खुदा इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है

إِنَّمَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَتَلُوا فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَهَرُوا ۖ عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ

खुदा तो बस उन लोगों के साथ दोस्ती करने से मना करता है जिन्होंने तुमसे दीन के बारे में लड़ाई की और तुमको तुम्हारे घरों से निकाल बाहर किया, और तुम्हारे निकालने में (औरों की) मदद की और जो लोग ऐसों से दोस्ती करेंगे वह लोग ज़ालिम हैं

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ مُهَجِّرَاتٍ ۖ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۚ ۚ اللَّهُ أَعْلَمُ
بِإِيمَانِهِنَّ ۚ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ ۖ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۚ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ
وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۚ وَءَاتُوهُنَّ مَّا أَنْفَقُوا ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ إِذَا
ءَاتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تُمْسِكُوا ۚ بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسَلُّوا ۚ مَّا أَنْفَقْتُمْ
وَلَيْسَلُّوا ۚ مَّا أَنْفَقُوا ۚ ۚ ذَلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ ۚ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۚ

ऐ ईमानदारों जब तुम्हारे पास ईमानदार औरतें वतन छोड़ कर आएँ तो तुम उनको आजमा लो, खुदा तो उनके ईमान से वाकिफ़ है ही, पस अगर तुम भी उनको ईमानदार समझो तो उन्ही काफ़िरों के पास वापस न फेरो न ये औरतें उनके लिए हलाल हैं और न वह कुफ़ार उन औरतों के लिए हलाल हैं और उन कुफ़ार ने जो कुछ (उन औरतों के मेहर में) खर्च किया हो उनको दे दो, और जब उनका मेहर उन्हें दे दिया करो तो इसका तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि तुम उससे निकाह कर लो और काफिर औरतों की आबरू (जो तुम्हारी बीवियाँ हों) अपने कब्जे में न रखो (छोड़ दो कि कुफ़ार से जा मिलें) और तुमने जो कुछ (उन पर) खर्च किया हो (कुफ़ार से) लो, और उन्होंने भी जो कुछ खर्च किया हो तुम से माँग लें यही खुदा का हुक्म है जो तुम्हारे दरमियान सादिर करता है और खुदा वाकिफ़कार हकीम है

وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ ۖ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعاقِبْتُمْ فَاتُوا ۚ الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ
مِّثْلَ مَا أَنْفَقُوا ۚ ۖ وَاتَّقُوا ۚ اللَّهُ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ ۖ مُؤْمِنُونَ

और अगर तुम्हारी बीवियों में से कोई औरत तुम्हारे हाथ से निकल कर काफ़िरों के पास चली जाए और (खर्च न मिले) और तुम (उन काफ़िरों से लड़ो और लूटो तो (माले ग़नीमत से) जिनकी औरतें चली गयीं हैं उनको इतना दे दो जितना उनका खर्च हुआ है) और जिस खुदा पर तुम लोग ईमान लाए हो उससे डरते रहो

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَى أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا ۖ وَلَا يَسْرِقْنَ
وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَدَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُهْتَانٍ ۖ يَفْتَرِينَهُ ۖ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا
يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ ۚ ۖ فَبَايِعْهُنَّ وَأَسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۖ رَّحِيمٌ ۚ

(ऐ रसूल) जब तुम्हारे पास ईमानदार औरतें तुमसे इस बात पर बैयत करने आएँ कि वह न किसी को खुदा का शरीक बनाएँगी और न चोरी करेंगी और न जेना करेंगी और न अपनी औलाद को मार डालेंगी और न अपने हाथ पाँव के सामने कोई बोहतान (लड़के का शौहर पर) गढ़ के लाएँगी, और न किसी नेक काम में तुम्हारी नाफ़रमानी करेंगी तो तुम उनसे बैयत ले लो और खुदा से उनके मग़फ़िरत की दुआ माँगो बेशक बड़ा खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَتَوَلَّوْا ۚ قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوا ۚ مِنْ آلِ ءَاخِرَةِ
كَمَا يَيْسُ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ

ऐ ईमानदारों जिन लोगों पर खुदा ने अपना ग़ज़ब ढाया उनसे दोस्ती न करो (क्योंकि) जिस तरह काफ़िरों को मुर्दों (के दोबारा ज़िन्दा होने) की उम्मीद नहीं उसी तरह आख़ेरत से भी ये लोग न उम्मीद हैं